

फ़िलिप्स क्लासरूम विधि में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभावशीलता का अध्ययन

डॉ. रजनी धाबाई

शोधकर्त्री

प्रो. सरोज गर्ग

अधिष्ठाता, शिक्षा संकाय

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड-टू-बी) विश्वविद्यालय, उदयपुर

प्रस्तावना :

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है बालक और प्रगतिशील समाज के मध्य गहरी खाई को पाटने की दृष्टि से शिक्षा ही ऐसा माध्यम है जो किसी निश्चित लक्ष्य के अनुसार समाज की परिवर्तित आवश्यकताओं एवं आदर्शों को दृष्टि में रखते हुए बालक की मूल प्रवृत्तियों का इस रूप में विकास कर सकती है जिसमें व्यक्ति व समाज दोनों का ही विकास हो इस रूप में शिक्षा का लक्ष्य समाज के आदर्शों, आवश्यकताओं को मूर्त रूप देते हैं।

प्रत्येक समाज का जीवन के प्रति निश्चित दृष्टिकोण होता है जिसके आधार पर ही मानव जीवन के लक्ष्यों का निश्चय होता है। इनकी प्राप्ति के लिए शिक्षा की आवश्यकता होती है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन की वाहिका है एवं सशक्त माध्यम है शिक्षा के द्वारा सामाजिक परिवर्तनों को अति सरलता से लाया जा सकता है शिक्षा का सामाजिक परिवर्तनों पर अधिक प्रभाव पड़ा है। समाज के विभिन्न वर्गों द्वारा परिवर्तनों को अपनाने में सहायता शिक्षा द्वारा प्रदान की गई है। शिक्षा सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि करती है शिक्षा के द्वारा सामाजिक रूपान्तरण में बाधक घटकों को दूर किया जा सकता है। शिक्षा के द्वारा ही सृजनात्मक चिन्तन के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार किया जाता है।

शिक्षा के द्वारा समाज और व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विद्यालय का पाठ्यक्रम व्यक्तिगत विभिन्नताओं, प्रेरणाओं, मूल्यों और सीखने के सिद्धान्तों के मनोवैज्ञानिक ज्ञान पर आधारित होना चाहिए। शिक्षण और सीखने में सामूहिक और परस्पर संबंधों का अवसर आता है। कक्षा का वातावरण शिक्षा की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह वातावरण जहाँ एक ओर शिक्षक— शिक्षार्थी के परस्पर संबंधों से बनता है। प्रत्येक बालक सामूहिक परिस्थिति में विकसित होता है। शिक्षा मनोविज्ञान कक्षा में बालकों के परस्पर संबंधों को समन्वित बनाने के शिक्षक की सहायता करता है।

आज की शिक्षा बाल केन्द्रित है इसमें प्रत्येक बालक की ओर अलग से ध्यान दिया जाता है। आज के शिक्षक को केवल शिक्षा को नहीं बल्कि शिक्षार्थी को भी जानना होता है क्योंकि आधुनिक शिक्षा विषय प्रधान न होकर बाल केन्द्रित है इस बात का महत्व है कि शिक्षक बालक के व्यक्तित्व का कहाँ तक विकास कर पाता है।

बालक के विकास के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के विषय और कार्यक्रम देना आवश्यक है ताकि उसकी सभी मानसिक शक्तियों और प्रक्रियाओं का समुचित विकास हो सकें। आजकल केवल सम्पूर्ण शिक्षा में ही विविधता आवश्यक नहीं मानी जाती बल्कि यह भी माना जाता है कि किसी एक विषय की शिक्षा में एक नहीं बल्कि अनेक कार्य और प्रक्रियाएँ सम्मिलित होती है। शिक्षक को इन सभी का ज्ञान होना चाहिए।

आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है अतः केवल किताबी शिक्षा ही काफी नहीं मानी जाती है। मनोविज्ञान में अध्यापन विधियों को बदल डाला है नित्य नये अनुसंधानों की शिक्षा के ऐसे उपायों को निकालने का प्रयास किया जा रहा है जिनमें बालक स्वयं सीखे और अपना सर्वांगीण विकास करे रेडिया, चलचित्र, पोर्डकास्ट, विडियो, पीडीएफ, पीपीटी आदि अध्ययन विधि उपयोग में ली जा रही है उसी में से एक है फ़िलिप्स क्लासरूम विधि द्वारा शिक्षण करवाना। यह एक आधुनिक शिक्षण पद्धति है जो पारंपरिक शिक्षा को पलट देती है। इसमें छात्र घर पर विडियो लेक्चर या ऑनलाइन सामग्री के माध्यम से नया पाठ सीखते हैं और कक्षा के समय का उपयोग चर्चा समस्या समाधान और

व्यावहारिक गतिविधियों के लिए करते हैं यह पहले सीखने, फिर चर्चा करने पर आधारित हैं। फिलिप्स क्लासरूम कक्षा में केवल व्याख्यान नहीं होता बल्कि छात्र समूहचर्चा, वाद विवाद व गहन शोध शामिल होते हैं।

छात्र अपनी गति से सामग्री देख सकते हैं व अवधारणाओं को समझ सकते हैं शिक्षक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं। फिलिप्स कक्षा वह प्रणाली है जिसमें छात्रों की समझ को व्याख्यान के बजाय कक्षा में ही विकसित करने पर जोर दिया जाता है। इसमें कक्षा के पारंपरिक मॉडल को संशोधित किया जाता है जिसमें गृहकार्य कक्षा में पूरा किया जाता है और व्याख्यान घर देखे जाते हैं। फिलिप्स क्लासरूम का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि जब शिक्षक छात्रों को विषय वस्तु के माध्यम से मार्गदर्शक करते हैं तो उन्हें गहन शिक्षण अनुभव प्राप्त हो इनमें केवल समझ ही नहीं बल्कि उच्च स्तरीय चिंतन कौशल और अनुप्रयोग कौशल पर भी बल दिया जाता है।

फिलिप्स क्लासरूम में छात्र घर पर पाठ देखते हैं और विद्यालय में अपने सहपाठियों या शिक्षक के सहयोग से उस विषय को सीखते हैं। इस पद्धति के लाभों के छात्रों को अपनी शिक्षा पर अधिक नियंत्रण देना, छात्र केन्द्रित शिक्षा और सहयोग को बढ़ावा देना, घर पर विषय वस्तु तक पहुँच प्रदान करना शामिल हैं।

फिलिप्स क्लासरूम के कई फायदे हैं इसमें विद्यार्थी घर पर विडियो नोट्स शिक्षक सहायक सामग्री अपनी सुविधा के अनुसार बार-बार देख सकते हैं। कक्षा में केवल व्याख्यान नहीं, बल्कि चर्चा, प्रश्न उत्तर व गतिविधियाँ होती हैं। विद्यार्थी सक्रिय रूप से भाग लेते हैं जिसमें बोलने और सोचने की क्षमता बढ़ती है। कठिन विषयों को शिक्षक की सहायता से कक्षा में अच्छे से समझा जा सकता है। समूह कार्य द्वारा टीम कार्य की भावना विकसित होती है।

फिलिप्स क्लासरूम में तकनीक आधारित आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा मिलता है। विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण विकसित होता है इसमें समस्या समाधान कौशल बढ़ते हैं। विद्यार्थियों के लिए सीखना अधिक रोचक प्रभावी व सहभागिता पूर्ण बनता है।

शोध के उद्देश्य :

शोध के उद्देश्य किसी भी शोध परियोजना की नींव होते हैं। उद्देश्य अनुसंधान के लिए एक व्यापक संदर्भ प्रदान करते हैं किसी समस्या विशेष या चिंता का वैज्ञानिक विधियों का उपयोग करते हुए सावधानीपूर्वक व विस्तृत अध्ययन करना शोध के उद्देश्य होते हैं सूचना का गहन विश्लेषण नए प्रश्न अज्ञात का पता लगाना व नई संभावनाओं को खोलना आदि शोध के उद्देश्य होते हैं।

1. राजनीति विज्ञान की विषयवस्तु का चयन करना
2. फिलिप्स क्लासरूम टिचिंग पर आधारित पाठयोजनाओं का निर्माण करना।
3. परंपरागत शिक्षण विधि से शैक्षिक उपलब्धि का पता लगाना।
4. फिलिप्स क्लासरूम विधि में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना :

किसी भी साक्ष्य के आधार पर बनाई गई धारणाओं को परिकल्पना कहा जाता है यह किसी भी जाँच का प्रारम्भिक बिन्दु है जो शोध प्रश्नों को पूर्वानुमानों में बदल देता है।

परिकल्पना अवलोकन और प्रयोग को संभव बनाने में मदद करती है यह जांच का प्रारम्भिक बिन्दु बन जाता है एवं इसमें जांच को सही दिशा में निर्देशित करने में मदद मिलती है।

1. परम्परागत शिक्षण एवं फिलिप्स क्लासरूम द्वारा शिक्षण करने में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अंतर नहीं है।

इससे पाठ्यक्रम के निर्माताओं को नवीन दिशा मिल सकेगी बालको को अधिगम में आने वाली

कठिनाइयों को दूर करने का समाधान मिल सकेगा व सीखे हुए ज्ञान को समाज के उत्थान में उपयोग कर सकेंगे।

समस्या का औचित्य :

शोधकार्य वैज्ञानिक व क्रमबद्ध रूप से किसी समस्या का समाधान होता है। समस्या पर शोधकार्य करने से पूर्व यह देखना आवश्यक है कि समस्या का हल कितना उपयोगी है तथा समस्या का शिक्षा एवं व्यावहारिक जीवन में कितनी उपयोगिता है। प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों, प्रधानाध्यापकों, पाठ्यक्रम निर्माताओं के लिए उपयोगी एवं महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

1. विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से

इसमें विषय को अधिक सरल बनाया जा सकता है विद्यार्थी जो परम्परागत विधि से उबाऊपन महसूस करते हैं इनके लिए फ़्लिपड क्लास रूम नवीन ज्ञान को स्रोत माना जा सकता है। यह शोध कार्य सीनियर सैकण्डरी स्तर के विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण है इस शोध के माध्यम से विद्यार्थी यह जान पायेंगे कि प्रायोगिक विधि के द्वारा विषय संबंधी ज्ञान स्थायी व ज्ञानवर्धक किया जा सकता है।

2. शिक्षकों के दृष्टिकोण से

शिक्षक द्वारा फ़्लिपड क्लास द्वारा शिक्षण करवा कर विद्यार्थियों का ध्यान विषय पर एवं विषय वस्तु को सरल बनाकर पढ़ाया जा सकता है। शिक्षक द्वारा विषय को कई चरणों में विभाजित करके विषय के प्रति रुचि जागृत करवा सकते हैं। यह शोध कार्य केवल विद्यार्थियों के लिए ही नहीं बल्कि शिक्षकों की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है इस माध्यम से शिक्षक नवीन शिक्षण विधियों के बारे में जानकारी प्राप्त कर के शिक्षण को अधिक ज्ञानवर्धक बना सकते हैं।

3. अभिभावकों के दृष्टिकोण से

इस विधि द्वारा विद्यार्थी विषय को अधिक सरल तरीके से सीख सकता है एवं अभिभावकों को भी चिंताओं से मुक्ति मिलेगी अभिभावक भी इन विषय से संबंधित विडियो, पीपीटी, पीडीएफ एवं लेखक पढ़कर, देखकर अपना भी ज्ञान बढ़ा सकते हैं। प्रस्तुत शोध अभिभावकों के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है इसके माध्यम से अभिभावकों को पता चलेगा कि उनके बच्चे शिक्षा के प्रति कितने जागरूक हैं व बिना शिक्षक के भी वह विडियो द्वारा अधिगम कर सकते हैं।

4. पाठ्यक्रम निर्माताओं के दृष्टिकोण से

पाठ्यक्रम निर्माताओं का ध्यान भी विद्यार्थियों की रुचि पर रहेगा पाठ्यक्रम निर्माता को पाठ्यक्रम बनाते समय अधिक सरलता एवं नई तकनीकों के द्वारा कैसे ज्ञान दिया जा सकता है। उस पर ध्यान केन्द्रित रहेगा फ़्लिपड क्लास द्वारा पाठ्यक्रम के बोझ को भी कम किया जा सकता है एवं गृहकार्य को निश्चित किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध पाठ्यक्रम निर्माताओं के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। व्याख्यानों को निष्क्रिय रूप से सुनने के बजाय, छात्र गतिशील चर्चाओं। सहयोगी परियोजनाओं और व्यावहारिक गतिविधियों में संलग्न होते हैं। शिक्षक एक सुविधाकर्ता की भूमिका निभाता है छात्रों को मार्गदर्शन व सहायता प्रदान करता है।

पारिभाषिक शब्दावली :

इस शोध में प्रयुक्त होने वाली महत्वपूर्ण शाब्दिक परिभाषा इस प्रकार है—

1. शैक्षणिक उपलब्धि

छात्र शिक्षक या संस्थान ने अपने अल्पकालिक या दीर्घकालिक शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त किया है या नहीं अर्थात् छात्र ने अपने सीखने के लक्ष्यों को किस हद तक हासिल किया है। शैक्षणिक उपलब्धि

परीक्षण वह परीक्षण है जो किसी विशेष विषय के अथवा पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में ज्ञान, समझ और कुशलताओं का मापन करता है।

2. फिलिप्स क्लास रूम

फिलिप्स क्लासरूम में छात्रों को कक्षा में कदम रखने से पहले ही सीखने की सामग्री से परिचित कराया जाता है यह प्री क्लास तैयारी निर्देशात्मक विडियो देखने प्रासंगिक सामग्री पढ़ने या इंटरैक्टिव ऑनलाइन मॉड्यूल के साथ जुड़ने का रूप ले सकती है। उन्हें अपनी गति से अवधारणाओं का पता लगाने, रोकने रिवाइंड करने और वास्तव में सामग्री को आत्मसात करने का मौका मिलता है।

समस्या का परिसीमन :

किसी अध्ययन को प्रभावी व सरल बनाने हेतु उसे छोटा रूप प्रदान किया जाता है। अतः शोध की उपयोगिता के साथ वैधता व विश्वसनीयता बढ़ती है शोधार्थी अध्ययन की सुलभता के कारण शोध का परिसीमन किया जाता है।

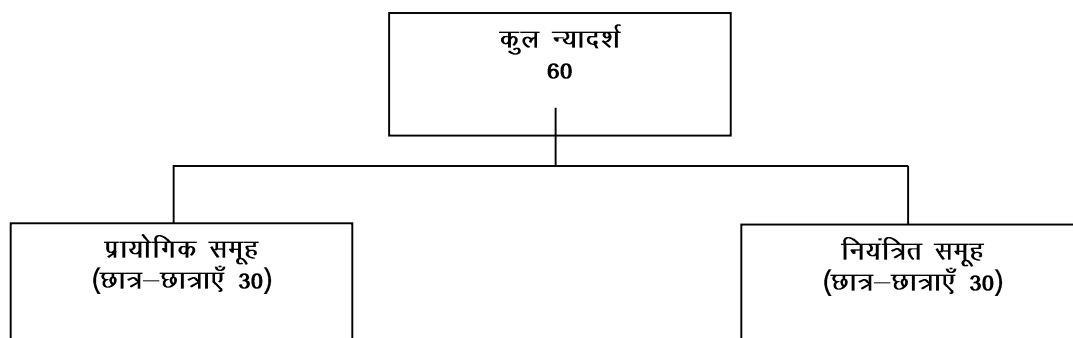
1. **भौगोलिक दृष्टि से** – शोधकार्य उदयपुर जिले के डबोक क्षेत्र के श्री मन्नारायण उच्च माध्यमिक विद्यालय, डबोक, उदयपुर को किया गया है।
2. **कक्षा सीमांकन की दृष्टि से** – कक्षा 11वीं के राजनीति विज्ञान के विद्यार्थियों तक ही सीमित रखा गया है।
3. **लिंगवार की दृष्टि से** – शोध अध्ययन हेतु छात्र छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।
4. **पाठ्यक्रम की दृष्टि से** – शोधार्थी द्वारा कक्षा 11वीं में पढ़ाई जाने वाली राजनीति विज्ञान विषय की पुस्तक की ईकाइयों का चयन किया गया है।
5. **अवधि की दृष्टि से** – प्रस्तुत शोधकार्य हेतु प्रायोगिक समूह को फिलिप्स क्लासरूम द्वारा 40 दिन तक प्रायोगिक उपचार किया जायेगा व नियंत्रित समूह को परम्परागत विधि द्वारा 20 दिन तक अध्ययन कराया जायेगा।

न्यादर्श :

न्यादर्श से तात्पर्य समग्र में से चुने हुए कुछ व्यक्तियों या वस्तु संग्रह है शोधकार्य में किसी भी शोधकर्ता के लिए सभी व्यक्तियों का अध्ययन करना असंभव है। अध्ययन के लिए कुछ व्यक्तियों को ही किया जा सकता है जो समग्र जनसंख्या का प्रतिनिधित्व कर सकें।

अनुसंधान कार्यों में न्यादर्श एक महत्वपूर्ण अंग है क्योंकि शोध की विषय वस्तु वहीं से उत्पन्न होती है। इस शोध का स्वरूप प्रयोगात्मक होने के कारण शोधार्थी को दो एक समान समूहों की प्रथम आवश्यकता थी दोनों समूहों के निर्माण हेतु प्रथम सोदेशीय न्यादर्श विधि द्वारा 60 छात्राओं का चयन किया गया है।

द्वितीय चरण में यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा छात्राओं को 30-30 के दो समूहों में प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूहों में विभक्त किया गया –



शोध विधि :

यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा शोधकर्ता अपने अध्ययन को इस तरह से बनाते हैं कि वे चयनित शोध उपकरणों का उपयोग करके अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर सकें। इसमें शोध डिजाइन डेटा संग्रह विधियाँ, डेटा विश्लेषण विधियाँ और समग्र ढाँचा शामिल है जिसके भीतर शोध किया जाता है।

शोधार्थी द्वारा वैज्ञानिक एवं तार्किक विधि के रूप में प्रायोगिक विधि का चुनाव किया गया।

प्रायोगिक विधि :

प्रयोगात्मक अनुसंधान पद्धति उपयोगिता की दृष्टि से अत्यंत व्यावहारिक है क्योंकि इसमें प्राकृतिक विज्ञानों की तरह ही यथार्थ निश्चित परिणाम प्राप्त करने के लिए सामाजिक घटनाओं का अध्ययन नियंत्रित परिस्थिति में किया जाता है।

ग्रीन वुड “प्रयोग कार्य कारण सम्बन्ध को व्यक्त करने वाली उपकल्पना के परीक्षण की विधि है जिसमें नियंत्रण परिस्थितियों के कार्य कारण संबंधों का मूल्यांकन करते हैं।”

शोध प्रक्रिया का प्रारूप निम्नलिखित है –

प्रायोगिक समूह – पूर्व परीक्षण – फिलिप्स क्लास रूम द्वारा

नियंत्रित समूह – पूर्व परीक्षण – परम्परागत विधि द्वारा

शोध उपकरण :

शोध उपकरणों को डिजाइन करते समय शोधकर्ता को शोध परिणामों की वैधता, विश्वसनीयता, सामान्यीकरण पर विचार करने की आवश्यकता होती है।

किसी शोध के लिए आंकड़े एकत्र करने हेतु निश्चित उपकरणों एवं प्रविधियों का उपयोग करना होता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन से संबंधित सूचनाओं को एकत्र करने के लिए शोधार्थी ने स्वनिर्मित उपकरणों का निर्माण किया।

1. पूर्व परीक्षण
2. पश्च परीक्षण
3. फिलिप्स क्लासरूप का निर्माण एवं मॉड्यूल

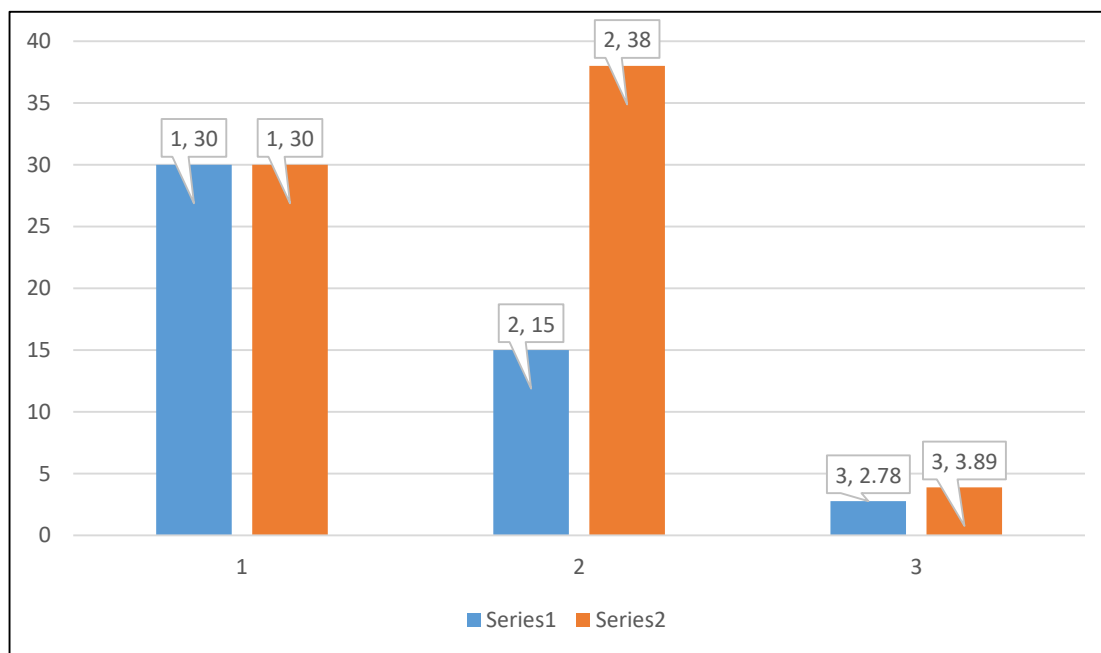
शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी :

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी निम्नांकित सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है।

1. औसत
2. प्रमाप विचलन
3. टी-मान

प्रायोगिक समूह (फ़िलिप्स क्लास) के पूर्व व पश्च परीक्षणों का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-मान

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक-विचलन	टी-मान	परिणाम
प्रायोगिक समूह (फ़िलिप्स क्लास) (पूर्व परीक्षण)	30	15	2.78	26.35	सार्थक अन्तर है।
प्रायोगिक समूह (फ़िलिप्स क्लास) (पश्च परीक्षण)	30	38	3.89		



व्याख्या :- उपयुक्त सारणी एवं आरेख को देखने पर यह पता चलता है कि प्रायोगिक समूह (फ़िलिप्स क्लास) के पूर्व व पश्च परीक्षणों का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 15, 38 तथा 2.78, 3.89 प्राप्त हुआ। तथा टी-मान 26.35 प्राप्त हुआ अतः प्रायोगिक समूह के पूर्व व पश्च परीक्षणों के कुल प्राप्तांकों के मध्यमान के मध्य सार्थक अन्तर है।

इससे स्पष्ट होता है कि फ़िलिप्स क्लास (प्रायोगिक समूह से शिक्षण कराने पर छात्रों की उपलब्धि के पूर्व व पश्च परीक्षणों में सार्थक अन्तर पाया गया है फ़िलिप्स क्लास रूम विधि अधिक प्रभावशाली है अतः परिकल्पना परम्परागत शिक्षण एवं फ़िलिप्स क्लास रूम द्वारा शिक्षण करने में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं है गलत साबित होती है।

शोध से प्राप्त निष्कर्ष

- प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों हेतु शिक्षण की प्रभावशीलता पर फ़िलिप्स क्लास रूम का सकारात्मक प्रभाव पाया गया है। फ़िलिप्स क्लास रूम के उपयोग से शिक्षक विषय वस्तुओं को प्रभावपूर्ण ढंग से समझा पाते हैं। साथ ही विषय सामग्री उपलब्ध कराने एवं ऑनलाइन शिक्षा के दृष्टिकोण से भी उपयोगी रहता है।
- प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों की अधिगम प्रभावशीलता पर भी फ़िलिप्स क्लासरूम का सकारात्मक प्रभाव पाया गया साथ ही विद्यार्थी विषय वस्तु को बेहतर ढंग से समझा पाते हैं अधिगम में भी उनकी रुचि बनी रहती है व अधिगम अपेक्षाकृत अधिक स्थायी बन पाता है।

- प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन पर फ्लिप क्लासरूम का प्रभाव साधारण नहीं बल्कि प्रभावी पाया गया।

- राजनीति विज्ञान की फ्लिप क्लास रूम विषय वस्तु का चयन किया गया यह अधिक प्रभावशाली रहा अधिगम को सरल व स्पष्ट बनाने के लिए फ्लिप क्लास रूम को अपनाया गया।

फ्लिप क्लास रूम आधारित पाठ योजना का निर्माण किया गया जिससे विषय वस्तु को अधिक रोचक, प्रभावशाली बनाया जा सकें। फ्लिप क्लास रूम के उपयोग से शिक्षक विषय वस्तु को प्रभावपूर्ण ढंग से समझा पाते हैं।

परम्परागत शिक्षण विधि शैक्षिक उपलब्धि का पता लगाया गया व यह पाया गया कि परम्परागत शिक्षण विधि की तुलना में फ्लिप क्लास रूम की शैक्षिक उपलब्धि अधिक रही है व परम्परागत शिक्षण विधि इतनी रुचि व प्रभावशाली नहीं जितने की फ्लिप क्लास रूम विधि।

फ्लिप क्लास रूम विधि में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर अधिक प्रभावशीलता भी रही।

प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों हेतु शिक्षण की प्रभावशीलता पर फ्लिप क्लास रूम का सकारात्मक प्रभाव पाया गया। फ्लिप क्लास रूम द्वारा विषय वस्तु को प्रभावपूर्ण ढंग से समझा पाते हैं साथ ही विषय सामग्री उपलब्ध कराने एवं ऑनलाइन शिक्षा के दृष्टिकोण से भी फ्लिप क्लास रूम उपयोगी रही व शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च रही है। विद्यार्थियों के सीखने के लक्ष्यों, परीक्षा के अंकों और समग्र अकादमिक प्रदर्शन के मूल्यांकन में फ्लिप क्लास रूम बेहतर रहा।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्ष एवं सुझाव इस तरह से उपयोगी है –

1. विद्यार्थियों के लिए

प्रस्तुत शोधकार्य विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी है इस शोध अध्ययन के माध्यम से कक्षा में चर्चा, गतिविधियों, समस्या समाधान में भाग लेते हैं जिससे सीखना अधिक प्रभावी बनता है। छात्र घर पर ही विडियो, नोट्स डिजिटल सामग्री देखकर पहले से तैयारी करते हैं इसमें आत्मनिर्भर अध्ययन की क्षमता विकसित होती है। कक्षा का समय केवल व्याख्यान में न जाकर कठिन विषयों को समझने के अभ्यास में जायेगा। इस विधि के माध्यम से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की भावना जागृत हो जायेगी विद्यार्थी समूह कार्य करके विचारों का आदान-प्रदान करते हैं व सामाजिक कौशल विकसित होता है। डिजिटल संसाधनों का उपयोग करके छात्रों में तकनीकी ज्ञान व डिजिटल साक्षरता बढ़ती है।

2. शिक्षकों के लिए

प्रस्तुत शोधकार्य न केवल विद्यार्थियों के लिए बल्कि शिक्षकों के लिए भी उपयोगी है। इस शोधकार्य के माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों को सही दिशा देता है व कठिन विषयों को एक सामग्री तैयार करके विद्यार्थियों को सीखने की प्रक्रिया को आसान बनाता है। शिक्षक चर्चा, प्रश्नोत्तर, समूह कार्य व गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को सक्रिय रखता है। फ्लिप क्लास रूम शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी की समस्या पर अलग-अलग ध्यान दे सकता है।

शिक्षक विद्यार्थियों को डिजिटल साधनों और ऑनलाइन सामग्री सही उपयोग करना सीखाता है। शिक्षक कक्षा के समय का उपयोग, अभ्यास, चर्चा और समस्याओं का समाधान करता है। शिक्षक विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और सीखने की रुचि विकसित करता है।

3. अभिभावकों के लिए

प्रस्तुत शोधकार्य शिक्षकों, विद्यार्थियों के लिए अपितु अभिभावकों के लिए भी उपयोगी है। माता-पिता

घर पर विडियो, नोट्स और गतिविधियों के माध्यम से बच्चे की पढ़ाई को समझ सकते हैं। अभिभावक यह देख सकते हैं कि बच्चों को कौनसा विषय समझ आ रहा है व क्या कठिनाई आ रही है।

अभिभावक भी फ्लिपड क्लास रूम का हिस्सा बनते हैं। अभिभावक बच्चे की रुचि और आवश्यकता के अनुसार घर पर अतिरिक्त सहायता दे सकते हैं। अभिभावकों को भी उस विषय की जानकारी प्राप्त होती है इसके अलावा अभिभावकों को आधुनिक तकनीक व डिजिटल शिक्षण पद्धतियों की जानकारी मिलती है।

4. पाठ्यक्रम निर्माताओं के दृष्टिकोण से

फ्लिपड क्लास रूम में पाठ्यक्रम निर्माता की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है इसमें पाठ्यक्रम निर्माता ऐसा शिक्षण वातावरण तैयार करते हैं जिसमें विद्यार्थी घर पर विडियो, नोट्स या डिजिटल सामग्री के माध्यम से विषय का प्राथमिक अध्ययन करते हैं।

फ्लिपड क्लास रूम विद्यार्थियों की आवश्यकता रुचि और गति के अनुसार पाठ्यक्रम तैयार करने में सहायता करता है। पाठ्यक्रम निर्माता विडियो, पीपीटी, क्विज, लेख पीडीएफ आदि विकसित कर शिक्षण को प्रभावी बनाते हैं।

कक्षा में केवल व्याख्यान न होकर चर्चा समूह कार्य प्रोजेक्ट और गतिविधियों को शामिल किया जाता है प्रत्येक विद्यार्थी अपनी गति से सामग्री को बार-बार देख सकता है जिसमें कमजोर विद्यार्थियों भी लाभ मिलता है।

पाठ्यक्रम निर्माता नए शिक्षण तरीकों और तकनीकों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर शिक्षा की आधुनिक बनाते हैं। निरंतर मूल्यांकन, ऑनलाइन टेस्ट और गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों की प्रगति का सही आकलन संभव है। विद्यार्थियों व शिक्षकों दोनों में डिजिटल तकनीक के उपयोग की क्षमता विकसित होती है।

21वीं सदी के कौशलों का विकास इसमें समस्या समाधान, संचार एवं डिजिटल साक्षरता जैसे कौशल विकसित होते हैं।

सन्दर्भ सूची :

1. भारतीय शिक्षा की समस्याएँ, डॉ. रामशकल पाण्डेय, 1974, प्रकाशक लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, हरीहर प्रेस मोती कटरा।
2. शिक्षा एवं भारतीय समाज, डॉ. रामपालसिंह वर्मा, 1994, प्रकाशक विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
3. भारतीय समाज एवं शिक्षा, सत्यदेव सिंह, 1986-87, नवयुग प्रकाशन, अजमेर
4. भारतीय शिक्षा की समस्याएँ तथा प्रवृत्तियाँ, सुबोध अदावाल और माहवेन्दु उनियाल, 1974, वहादत दीक्षित लखनऊ
5. भारतीय शिक्षा की समस्याएँ एवं विद्यालय प्रबंध, डॉ. रामपाल सिंह, नवयुग प्रकाशन, अजमेर, 1984
6. शिक्षा में नूतन आयाम, डॉ. लक्ष्मीलाल के.ओड़, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर 1988
7. शिक्षा और भारतीय समाज, डॉ. डी.वी. सिंह, अमृतांशु तेलंग, रिसर्च पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1999
8. भारत में शिक्षा का विकास, गुरसरन दास त्यागी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2007

9. भारतीय शिक्षा की समस्याएँ, डॉ. महावीर प्रसाद गुप्ता, साहित्य प्रकाशन, आगरा, 2006
10. The Differentiated flipped classroom : A Practical Guide to Digital Learning, Dr. Eric Carbough, Dr. Kristina Publishers, Corwin, 2015
11. Transforming Learning : The flipped classroom in a FE College, Donya, Ernst, 2015, Publish Grin Verlag.
12. Flipped Classroom, Prof. Vandana Punia, Dr. Reena Rani 2024, Publish, Indu book Service pvt. ltd.
13. Insights into flipped classroom, Adrian Leis, 2023, Publisher Castledown.
14. Blended Learning and flipped classroom : A Comprehensive guide, Patricia Adama and Happy gingres, 2020.
15. Flip your classroom : Jonathan Bergman Aaron, 2012, Publishers International Society for Technology
16. The Flipped Classroom: Carl Reidesena, Lydia Kavanagh Roger had Graft 2018, Publishers Springer Varlog, Singapore
17. Gamification in a flipped classroom, zamzani zainuddin, 2024, Springer Napure
18. The Flipped College classroom, Luey Santos Green, 2016, Springer International publishers.
19. Flipped classroom for Legel education, Lutr chrestian walff 2016, springer verlog singapore
20. Flipped classroom in the optional hepatology module, Hemen jaziri, Amal khsiba, 2024, Publisher our knowledge publishing.
21. lqek ¼2016½ "Life skills counseling for enhancing the personality of high school students: PHD University of mysore

'''